पाठ -18 नाखून क्यों बढ़ते हैं

लेखक -हजारी प्रसाद द्विवेदी

अल्पज्ञ - कम जानने वाला

दयनीय - दया के योग्य, कमजोर

दंड - सजा

निर्लज्ज - लज्जा रहित, बेशर्म

सेंघ - चोरी के लिए दीवार में किया गया छेद

बेहया - बेशर्म, निर्लज्ज

अस्त्र - हथियार

प्रतिद्वंद्वी - सामने आकर लड़ने वाला या विरोध करने वाला, मुकाबला करने वाला

देवताओं के राजा - इंद्र

वज्र - दधीचि की हड्डियों से बना इंद्र का अस्त्र

पलीता - बारूद लगी हुई डोरी

नखधर - नाखून वाला

वंचित - रहित

नखदंतावली - नाखून और दाँत पर निर्भर रहने वाला

तत् किम् - तो फिर क्या

कोटि-कोटि - करोड़ों

बर्बर युग - जंगली युग, सभ्यता पूर्व युग

अवशेष - बचा हुआ

पाशवीवृत्ति - जानवरों जैसी भावना

जीवंत - जीते - जागते, आनंद पूर्ण

विनोद - आनंद

वर्तुलाकार - गोल

दंतुल - दाँत के आकार का

विलासी - सुख सुविधा में जीने वाला

गोंड देश - बंगाल का एक भाग

दक्षिणात्य - दक्षिण के निवासी

अधोगामिनी - नीचे जाने वाली

मनुष्योचित - मनुष्य के लिए उपयुक्त मानवीय

सहजात वृत्तियाँ - जन्म के साथ उत्पन्न होने वाली विशेषताएँ या गुण

स्मृति - याद

वाक - बोलना, वाणी, भाषा

निर्बोध - मासूम

व्यवहृत - व्यवहार या कार्य में लाई गई

अनुवर्तिता - पीछे चलने का भाव, अनुकरण

नौसिखुए - किसी विषय को सीख रहे

आरक्षित - असुरक्षित

उत्तराधिकार - विरासत से प्राप्त अधिकार

विपुल - अधिक मात्रा में

उज्ज्वल - उजला

दीर्घकालीन - लंबे समय के

वांछनीय - चाहा हुआ, इच्छित

अनुसंधित्सा - खोजने की ललक, अनुसंधान की इच्छा

सरबस - सर्वस्व, सब कुछ

मूढ़ - मूर्ख

हितकर - कल्याणकारी

पूर्व संचित - पहले से संग्रहित, पहले से इकट्ठे किए हुए

नाना - अनेक प्रकार के

वर्ण - ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र - ये विभाजन

संयम - आत्म नियंत्रण, आत्म अनुशासन

उद्भावित - प्रकट

अविवेकी - सही गलत की पहचान न रखने वाला

आत्म निर्मित - स्वयं द्वारा बनाया हुआ

उत्स - मूल

लोहा लेना - सामना या मुकाबला करना

कमर कसना - तैयार होना

मिथ्या - झूठ

द्वेष - वैरभाव

आत्म-तोषण - अपनी संतुष्टि

उच्छृंखलता - मनमानापन

पैठकर - गहराई में जाकर

चरितार्थ - सार्थकता

लुप्त होना - खत्म होना, गायब होना

मारणास्त्र - मारने वाला/ विनाशकारी हथियार

बृहत्तर - व्यापक

तकाजा -मांग (यहाँ जरूरत)

अनायास - बिना प्रयास के

दयोतक - सूचक

संयम - नियंत्रित

महिमा - महत्त्व, बड़प्पन

संचयन - संग्रह

बाहुल्य - अधिकता

आडंबर - ढोंग, दिखावा

मंगल - कल्याण, भलाई

नि:शेष - कुछ भी शेष न बचे, संपूर्ण